अध्याय
02

स्वतंत्रता

स्वतंत्रता लैटिन शब्द "**लिबर्टी**" (Liberty) के Liber से बना है। जिसका अर्थ है- **बंधनों का अभाव।**

स्वतंत्रता की परिभाषा

- आधुनिक सभ्यता में जो सामाजिक परिस्थितियां व्यक्ति के सुख के लिए आवश्यक है, उन पर **प्रतिबंध का अभाव ही स्वतंत्रता** है।
- दूसरे शब्दों में स्वतंत्रता का अर्थ है मानव को उस कार्य को करने का अधिकार जो वह करने के योग्य है।

स्वतंत्रता के प्रकार

प्राकृतिक स्वतंत्रता

प्राकृतिक स्वतंत्रता वह स्वतंत्रता होती है जो जन्म से प्राप्त होती है। फ्रांसीसी विचारक रूसो की पुस्तक 'सोशल कॉन्ट्रैक्ट" के अनुसार मनुष्य स्वतंत्र उत्पन्न हुआ है परंतु प्रत्येक स्थान पर वह बंधन में बंधा हुआ है।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता

किसी व्यक्ति को स्वयं के निजी कार्यों में ,विचार और अभिव्यक्ति के मामलों में स्वतंत्रता। सरकार और समाज द्वारा कोई स्वतंत्रता पर कोई प्रतिबंध नही।

राजनीतिक स्वतंत्रता

व्यक्ति को अपने प्रतिनिधियों के चयन हेतु मतदान का अधिकार।

किसी पार्टी या दल बनाने या उसमें शामिल होने का अधिकार।

विधानमंडल के लिए निर्वाचित होने का अधिकार।

शासन की नीतियों और कार्यों का समर्थन अथवा विरोध करने का अधिकार है।

आर्थिक स्वतंत्रता

- कोई भी व्यापार या व्यवसाय चुनने का अधिकार
- वस्तुओं के उत्पादन तथा वितरण का अधिकार
- भूख और निर्धनता से मुक्ति का अधिकार

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

- किसी व्यक्ति या समाज को ठेस पहुंचाए बिना अपनी बात या अभिव्यक्ति को व्यक्त

© JCERT not to be republished

करने की स्वतंत्रता के अधिकार को ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहते है।

"तुम जो कहते हो मैं उसका समर्थन नहीं करता। लेकिन मैं मरते दम तक तुम्हारे कहने के अधिकार का बचाव करूंगा"।

- वॉल्टियर

जॉन स्टुअर्ट मिल के चार सबल तर्क

19वीं शताब्दी के ब्रिटेन के राजनीतिक विचारक जॉन स्टूअर्ट मिल ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भावपूर्ण पक्ष अपनी पुस्तक ऑन लिबर्टी में चार सबल तर्क के द्वारा प्रस्तुत किया।

- कोई भी विचार पूर्ण रूप से गलत नहीं होता उसमें सच्चाई का भी कुछ अंश होता है।
- सत्य स्वयं से उत्पन्न नही होता बल्कि विरोधी विचारों के टकराव से उत्पन्न होता है।
- जब किसी विचार के समक्ष कोई विरोधी विचार आता है तभी उस विचार की विश्वसनीयता सिद्ध होती है।
- आज जो सत्य है वह हमेशा सत्य नहीं रह सकता। कई बार जो विचार आज स्वीकार्य नही है वो आने वाले समय के लिए मूल्यवान हो सकता है।

स्वतंत्रता की अवधारणा

नागरिकों की स्वतंत्रता को सुरक्षित करने और उन्हें जागरूक करने में इस अवधारण का महत्वपूर्ण भूमिका है।

सकारात्मक स्वतंत्रता

- सकारात्मक स्वतंत्रता का अर्थ है जिसमे उचित प्रतिबंध
- इस स्वतंत्रता में राज्य को व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास के लिए दखल देने का अधिकार है।
- राज्य के नागरिको के कल्याण के लिए सभी क्षेत्रों में कानून बनाकर दखल देने का अधिकार है।
- इस अवधारणा के अनुसार कानून व्यक्ति की स्वतंत्रता में वृद्धि करता है।

नकारात्मक स्वतंत्रता

- इस अनुसार वह सरकार सर्वोत्तम है जो कम से कम शासन करें।
- नकारात्मक स्वतंत्रता का अर्थ है किसी प्रतिबंध का ना होना।
- इसमें राज्य का व्यक्ति पर काफी सीमित नियंत्रण होता है।
- इस अवधारणा के अनुसार कानून व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधा पहुंचाते हैं।

सामाजिक प्रतिबंध

समाज में किसी व्यक्ति या समूह या जाति पर लगे प्रतिबंध को सामाजिक प्रतिबंध कहते हैं।

जैसे- भारत में कुछ समय तक मंदिर में कुछ जातियों को जाने नही दिया जाता था। इस प्रकार के प्रतिबंध से व्यक्ति की स्वतंत्रता कम होती है।

प्रतिबंध के स्रोत

बलपूर्वक कानून के माध्यम से।

कल्याणकारी राज्य।

प्रभुत्व और बाहरी नियंत्रण।

आर्थिक और सामाजिक कारण।

© JOERT not to be republished

प्रतिबंधों की आवश्यकता

- सीमित संसाधनों के उचित बंटवारे के लिए।
- सार्वजनिक कल्याण के लक्ष्य हेतु।
- दूसरे व्यक्ति के अधिकारों की पूर्ति हेतु।
- मुक्त समाज में अपने विचारों को बनाए रखने हेतु।
- टकराव की स्थिति को रोकने हेतु।

स्वतंत्रता के चार संरक्षक

1. प्रजातंत्र की स्थापना

स्वतंत्रता को बाधित करने वाली सरकार को प्रजातंत्र में मतदान के द्वारा हटाया जा सकता है।

2. मौलिक अधिकारों की घोषणा

स्वतंत्रता की सुरक्षा तभी सुनिश्चित हो सकती है जब नागरिकों के अधिकारों को संविधान में वर्णित किया गया हो।

3. शक्तियों का विकेंद्रीकरण

स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए शक्तियों का विकेंद्रीकरण जरूरी है। शक्तियों के केंद्रीकरण से राज्य में निरंकुशता बढ़ती है,जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है और नागरिकों का उत्पीड़न होता है।

4. स्वतंत्र न्यायपालिका

नागरिकों के स्वतंत्रता की सुरक्षा संविधान के बाद न्यायपालिका ही करती है। न्यायपालिका नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करती है।

स्वतंत्रता पर लिखी गई पुस्तक

1. लाँग वॉक टू फ्रीडम
2. नेल्सन मंडेला
3. दक्षिण अफ्रीका
4. फ्रीडम फ़ॉर फीयर
5. आँग सान सू की
6. म्यांमार
7. ऑन लिबर्टी
8. जॉन स्टुअर्ट मिल
9. ब्रिटेन
10. सोशल कॉन्ट्रैक्ट
11. रूसो
12. फ्राँस
13. हिंद स्वराज
14. महात्मा गांधी
15. भारत

हानि का सिद्धांत

जॉन स्टुअर्ट मिल ने इस सिद्धांत को अपनी पुस्तक ऑन लिबर्टी में प्रस्तुत किया है।

इस सिद्धांत के अनुसार- "किसी के कार्य करने की स्वतंत्रता में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से हस्तक्षेप करने का एकमात्र लक्ष्य आत्मरक्षा है। सभ्य समाज के किसी सदस्य की इच्छा के खिलाफ शक्ति औचित्यपूर्ण प्रयोग का एकमात्र उद्देश्य किसी अन्य को हानि से बचाना हो सकता है'।

© JCERT not to be republished

स्वयंसंबद्ध कार्य

ये मेरा काम है, मैं इसे वैसे करूंगा, जैसा मेरा मन होगा।

इस मामले में राज्य या किसी बाहरी सत्ता को कोई हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं है। इस कार्य का प्रभाव कार्य करने वाले व्यक्ति पे ही पड़ता है।

परसंबद्ध कार्य

अगर तुम्हारे गतिविधियों से मुझे कुछ नुकसान होता है तो किसी ना किसी बाहरी सत्ता को चाहिए कि मुझे इन नुकसानो से बचाए। इस कार्य का प्रभाव कर्ता के अलावा अन्य लोगो पर भी पड़ता है।

अभ्यास के प्रश्न

बहुविकल्पी प्रश्न

1. स्वतंत्रता का लिबर्टी (Liberty) शब्द किस भाषा का है?

   a. ग्रीक b. रोमन

   c. लैटिन d. कोई नही

2. जॉन स्टुअर्ट मिल की पुस्तक का क्या नाम है?

   a. लाँग वॉक टू फ्रीडम

   b. ऑन लिबर्टी

   c. सोशल कॉन्ट्रैक्ट

   d. हिंद स्वराज

3. नेल्सन मंडेला किस देश संबंधित थे?

   a. फ्राँस b. ब्रिटेन

   c. दक्षिण अफ्रीका d. जर्मनी

4. स्वतंत्रता के कितने संरक्षक हैं?

   a. तीन b. चार

   c. पाँच d. दो

5. नागरिकों के स्वतंत्रता की सुरक्षा कौन करता है?

   a. लोकसभा b. राज्यसभा

   c. कार्यपालिका d. न्यायपालिका

लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. स्वतंत्रता से सम्बंधित जे. एस. मिल के तर्क को लिखिए?

प्रश्न 7. स्वतंत्रता के चार संरक्षक के बारे में लिखिए।

प्रश्न 8. सामाजिक प्रतिबंध के बारे में लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9. स्वतंत्रता क्या है? यह कितने प्रकार के होती है, वर्णन कीजिये।

प्रश्न 10. स्वतंत्रता की अवधारणा क्या है? इसके बारे में वर्णन कीजिए।

© JCERT not to be republished